(b) what is the extent of the assistance given and of the assistance promised ?

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI RAJ BAHADUR) : (a) The minor port of Miryabay in Maharashtra State is included in the Centrally Sponsored Schemes for the grant of loan assistance for developmental purposes.

(b) A loan assistance of Rs. 74 lakhs has so far been released against an outlay of Rs. 107 lakhs provided for this scheme under the Centrally Sponsored Schemes included in the Fourth Plan for the development of minor ports and, based on the progress of the scheme, the remaining Rs. 33 lakhs will be released during the remaining two years of the Plan period.

केन्द्रीय चारा अनुसंधान संस्थान झांसी द्वारा किया गया अनुसंधान कार्य

2395. **डा० गोविन्द दास रिछारिया** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) झांसी स्थिति केन्द्रीय चारा अनुसंधान संस्थान ने अपने कार्य क्षेत्र में अभी तक क्या-क्या मुख्य वैज्ञानिक खोजें और परीक्षण किए हैं ; और

(ख) इन खोजों, एवं परीक्षणों के परिणामों को सामान्य किसानों के लाभ के लिए उन तक पहुंचाने हेतु क्या कार्यवाही की गई है ?

कृषि मन्त्रालय में राज्य मन्त्री (प्रो० शेर सिंह) : (क) भारतीय चरागाह तथा चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी में वनस्पति सुधार, मृदा विज्ञान तथा शस्य-विज्ञान, चरागाह व्यवस्था, वनस्पति पशु सम्बन्ध, खरपतवार पारस्मिति की तथा नियंत्रण से सम्बन्धित 5 प्रभाग और फार्म, कृषि इंजीनियरिंग, सांख्यिकी तथा पुस्तकालय से सम्बन्धित 4 अनुभाग हैं। यह संस्थान अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के सम्बन्ध में अधिक उत्पादनशील किस्मों तथा खेती की पद्धतियों के विकास के लिये, चारे की फसलों की विभिन्न किस्मों पर और घासों पर, आधारिक तथा व्यवहारिक अनुसंधान करता हैं।

वनस्पति सुधार प्रभाग में, ऐसी दो आशाजनक लसुन घास का पता लगाया है, जोकि अपनी प्रत्येक कटाई के बाद अधिक बढ़ती है और अधिक बीजों को लगाने की क्षमता रखती है। ये किस्में किसी भी कटाई में 880 कि०/हैं० तक उपज देती हैं। लोबिया की दो आशाजनक किस्मों का, जिनकी एक बार या दो बार की कटाई पर क्रमश: 323 तथा 363 कि०/है० हरे चारे की उपज की क्षमता है, पता लगाया गया है। इन किस्मों का, जिनमें सूखे तोल के आधार पर 25 प्रतिशत तक प्रोटीन है, अधिक उत्पादनशील पोसक किस्मों के विकास के लिये संकरण कार्यक्रम में उपयोग किया जा रहा है। एक कटाई तथा बहुत कटाई के लिये ज्वार में दो आशाजनक किस्में निकाली गयी हैं। हरे चारे का अधिक उत्पादन देने के अतिरिक्त, ये किस्में कम एच० सी० एन० तत्व वाली मीठी पाई गई। अन्य घासों में 1227 कि०/है० तक की हरे चारे की उपज देने वाली पेनिसेटम पेडीसेलेटम में से दो आशाजनक किस्में निकाली गयी हैं। जो ज्वार की आशाजनक प्रतिपूरक समझी जाती हैं। अब इनकी अनुकूलता तथा सस्य सम्बन्धी स्थिरता के निर्धारण के सम्बन्ध में, देश की विभिन्न कृषि जलवायु की परिस्थितियों के अन्तर्गत, बड़े पैमाने पर स्थानीय बहु-परीक्षणों के लिए इन पदार्थों को पर्याप्त रूप से बढ़ाया जा रहा है।

मृदा विज्ञान तथा सस्य विज्ञान प्रभाग में, उर्वरक उपयोग, मृदा जल प्रबन्ध, खेती की पद्धति तथा चारा तथा बीज उत्पादन दोनों के सूक्ष्म-पोसक अध्ययनों में विकासशील आधुनिक सस्य विज्ञान सम्बन्धी पद्धतियों पर अनुसंधानों कार्य किया गया है। वर्तमान खेती के प्रतिमानों में चारे की फसलों के सम्भाव्यता तथा मितव्यता के सम्बन्ध में भी अध्ययन किया जा रहा है।

अधिकतम दक्षता से पशुधन उत्पादकों का उत्पादन करने के विचार से, प्राकृतिक चरागाहों का सुधार, व्यवस्था तथा उपयोग सम्बन्धी समक्ष मितव्ययी तथा व्यावहारिक पद्धतियों के विकास के सम्बन्ध में कार्य किया गया है।

वनस्पति-पशु सम्बन्ध-प्रभाग में विभिन्न प्रकार के घास तथा चारा की फसलों की पचनीयता के सम्बन्ध में अनुसंधान कार्य किये गये हैं। जांच की गति बढ़ाने की दृष्टि से, संस्थान में पचनीयता के निर्धारण के लिए बहुत सी किस्मों के चारे की फसलों का अन्तः पात्र तकनीकों का मानकीकरण किया गया है। लोबिया तथा हरी मक्की के 2 : 1 मिश्रण से घास बनाने के लिए एक तकनीक का विकास किया गया है, जो जानवरों के पालन की आवश्यकता प्रदान करती है। उच्च कोटि की बरसीम घास तैयार करने की एक सक्षम तथा मितव्ययी पद्धति विकसित की गई है।

खरपतवार परिस्थिति की तथा नियंत्रण प्रभाग ने रासायनिक शाकनासी का प्रयोग कर खरपतवारों के सब पहलुओं तथा उनके नियंत्रण पर अनुसधान किया है।

कृषि इंजीनियरिंग अनुभाग ने पशुओं से चलाये जाने वाले सिंचाई नाली तथा बाध बनाने का विकास किया है, जोकि एक ही बार के संचालन मे वांछित आकार की नालियों को बना सकता है। जाड़ों के दौरान पाला से फसलों की सुरक्षा के लिये सादा तथा मितव्ययी स्मोक स्क्रीन जेनेरेटर का भी विकास किया गया है। किनारों पर लसून घास तथा अन्य फसलों की बुवाई के लिए, एक देशी प्तो माउन्टेड सीड ड्रिल तैयार किया गया है। संस्थान ने पौधों में शाकनाशी / खरपतवार-नाशी के चिस्ती प्रयोग के लिये विभिन्न प्रकार के नोजल्स टीका के साथ शाकनाशी उपकरण का भी विकास किया है।

(ख) भारतीय चरागाह तथा चारा अनुसंधान संस्थान में किये गये अनुसंधान के परिणाम, किसानों में प्रसार करने के लिये राज्यों के कृषि निदेशकों, पशु-पालन निदेशकों, राज्यों के दुग्ध आयुक्तों तथा कृषि मंत्रालय के कृषि विस्तार निदेशालय को बताये जाते हैं। इसके अतिरिक्त, क्षेत्रीय भाषाओं में अनुसंधान तथा लोकप्रिय लेख प्रकाशित किये जाते हैं और कृषकों को उपलब्ध किए जाते हैं। संस्थान ने हाल ही मे एक विस्तार प्रभाग स्थापित किया है, जो कृषकों को अनुसधान के परिणाम उपलब्ध करने के लिये सीधा उत्तरदायी होगा।

झांसी में आयुर्वेदिक साहित्य में उच्च अध्ययन तथा अनुसंधान कार्यों के लिये केन्द्रीय संस्थान की स्थापना

2396 **डा० गोविन्द दास रिछारिया :** क्या **स्वास्थ्य और परिवार नियोजन** मंत्री 12 जुलाई, 1971 के अतारांकित प्रश्न संख्या 4557 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) झांसी मे आयुर्वेदिक साहित्य में उच्च अध्ययन तथा अनुसधान कार्य करने हेतु केन्द्रीय संस्थान स्थापित करने सम्बन्धी योजना को कार्यरूप देने मे असाधारण विलम्ब के लिये उत्तरदायी अधिकारियो के विरुद्ध सरकार का विचार क्या कार्यवाही करने का है ; और

(ख) उक्त सस्थान की स्थापना मे सरकार कितना समय और लेगी ?

स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मन्त्रालय में राज्य मन्त्री (प्रो० डी० पी० चट्टोपाध्याय) : (क) किसी अधिकारी की ओर से कोई असाधारण विलम्ब नही हुआ है।

(ख) क्योंकि सस्थान की स्थापना संबंधी कानूनी, वित्तीय तथा अन्य पहलुओं का अध्ययन किया जा रहा है, अतः यह अनुमान लगाना कठिन है कि इसकी स्थापना में कितना समय लगेगा।